शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की महिलाओं में प्रसार माध्यमों का अनुपूरक आहार के उपयोग पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

सुनीता अगलेचा (शोधार्थी)
डॉ. मंजु शर्मा (निर्देशक)
माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शिशु के जन्म के बाद उसकी प्रारम्भिक आवश्यकता होती है पोषण आहार। उसमें माँ का दूध उसकी समस्त आवश्यकताएं पूरी करता है। उससे उसके जीवन की सही शुरुआत होती है। माँ के आहार शिक्षण के लिए प्रचार माध्यमों से जानकारियाँ निरंतर प्रसारित की जाती हैं। इनका लाभ शिक्षित महिलाओं के साथ-साथ अशिक्षित महिलाओं को भी मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की महिलाओं में प्रसार माध्यमों का अनुपूरक आधार के उपयोग पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है

शोध अध्ययन के उद्देश्य

जन्म के बाद शिशुओं की जरूरतें होती हैं सम्पूर्ण आहार, प्यार और सुरक्षा। माँ का दूध शिशु की सारी आवश्यकताएं पूरी करता है। साथ-साथ माँ का दूध शिशु को सही शुरूआत भी देता है। आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं में प्रसार माध्यमों (टी.वी., समाचार पत्र, रेडियो आदि) का अनुपूरक आहार के उपयोग पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकल्पना : आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं में प्रसार माध्यमों (टी.वी, समाचार पत्र, रेडियो आदि) का अनुपूरक आहार के उपयोग पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।

निदर्शन विधि : प्रस्तुत अध्ययन में बडवानी जिले के प्रत्येक विकासखण्ड से धात्री महिलाओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन हेतु कुल 420 महिलाएं, जिसमें सें 210 आदिवासी वर्ग की महिलाएं ओर 210 सामान्य वर्ग की महिलाए (105 अशिक्षित महिलाएं एवं 105 शिक्षित महिलाएं) का चयन दैव निदर्शन विधि एवं उदेश्यपूर्ण पद्धति द्वारा किया गया है।

उपकरण : आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की महिलाओं में स्तनपान की प्रवृति का अध्ययन करने हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया हैं।

सांख्यिकीय विधि : संकलित तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु काई वर्ग एवं प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया हैं।

निष्कर्ष : तथ्यों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं में प्रसार माध्यमों (टी.वी, समाचार पत्र, रेडियो आदि) का अनुपूरक आहार के उपयोग पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रस्तावना

जन्म के बाद शिशुओं की जरूरतें होती हैं सम्पूर्ण आहार, प्यार और सुरक्षा। माँ का दूध शिशु की सारी आवश्यकता पूरी करता है। साथ-साथ माँ का दूध शिशु को सही शुरूआत भी देता है। स्तनपान प्राकृतिक है। माँ के प्यार की तरह। इसकी जगह ओर कोई नहीं ले सकता है। लगभग हर माँ अपने शिशु को स्वयं का दूध पिला सकती है। जरूरत इस बात की है कि उन्हें इसके बारे में सही जानकारी दी जाए और उनके साथ पर्याप्त सहयोग किया जाए। स्तनपान प्रत्येक माँ और बच्चे का अधिकार है। यहाँ तक कि कुपोषण की शिकार माताएं भी अपने शिशु को सफलतापूर्वक दूध पिला सकती हैं। बच्चा जब माँ के स्तन से दूध पीता है तो माँ के स्तन में दूध बनने लगता है और यही इसकी सफलता का राज है।

तालिका क्र 1

आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं में प्रसार माध्यमों (टी.वी, समाचार पत्र, रेडियो आदि) का अनुपूरक आहार के उपयोग पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।

		सामान्य वर्ग			आदिवासी वर्ग			
क्रं	संचार साधन	शिक्षित महिलाएँ: %	अशिक्षित महिलाएँ %	योग	शिक्षित महिलाएँ%	अशिक्षित महिलाएँ %	योग	महायोग
1	टी.वी	47	52	49	35	35	35	42
2	समाचार-पत्र	25	16	21	20	10	15	18
3	अन्य	15	22	18	10	07	08	13
4	नही करती	13	10	12	35	48	42	27
		100 N=105	100 N=105	100 N= 210	100 N=105	100 N=105	100 N= 210	100 N=420

अनुपूरक आहार की जानकारी हेतु संचार साधनों

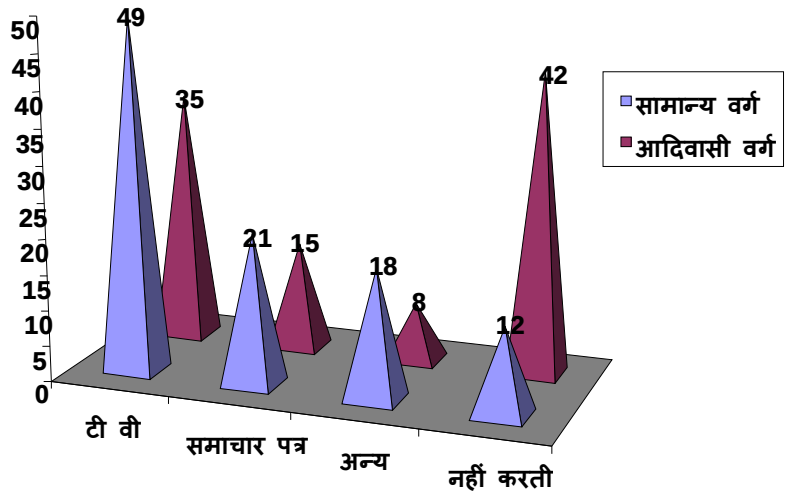

तथ्यों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता हैं कि x^{2cal} का मान 106.658 प्राप्त हुआ है जो कि Df = 7 7 (0.05 सार्थकता के स्तर पर) के मान 14.067 से अधिक पाया गया हैं। अतः शून्य उपकल्पना अस्वीकार की जाती हैं। अर्थात आदिवासी एवं सामान्य वर्ग की शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं में प्रसार माध्यमो (टी.वी, समाचार-पत्र, रेडियो) का पूरक आहार के उपयोग पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक पाया गया हैं।

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्य वर्ग की अशिक्षित महिलाएं सबसे अधिक टी.वी. के माध्यम से अनुपूरक आहार की जानकारी प्राप्त करती हैं, वही सामान्य वर्ग की सर्वाधिक शिक्षित महिलाएं समाचार पत्र से यह जानकारी प्राप्त करती हैं, किन्तु आदिवासी वर्ग की केवल 20 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं समाचार पत्र का उपयोग करती हैं। जबकि आदिवासी वर्ग की 48 प्रतिशत अशिक्षित महिलाएं अनुपूरक आहार की जानकारी के लिये संचार साधनों के किसी विकल्प का उपयोग नहीं करती हैं। सामान्य वर्ग की 80 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं शिशु की छ माह की आयु होने पर अनुपूरक आहार देना प्रारंभ कर देती हैं। आदिवासी वर्ग की शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं में यह केवल 47 प्रतिशत पाया गया है। इसी प्रकार से शिशु की एक वर्ष की आयु होने पर अनुपूरक आहार बच्चे को देने का सबसे कम प्रतिशत सामान्य वर्ग की शिक्षित महिलाओं में पाया गया हैं। सबसे अधिक प्रतिशत आदिवासी वर्ग की शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं में पाया गया है। आदिवासी वर्ग की सर्वाधिक अशिक्षित महिलाएं अन्य वर्गो की तुलना में अनुपूरक आहार के विकल्प के रूप में अन्य पदार्थ जैसे मक्के के आटे एवं छाछ की राबडी, मक्के की थूली आदि का उपयोग करती हैं। इसके विपरीत सामान्य वर्ग की 58 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं बाजार के डिब्बाबन्द पदार्थो पर ज्यादा निर्भर पायी गयी हैं। दाल-चावल का पानी विकल्पानुसार शिशु को अनुपूरक आहार के रूप में सामान्य वर्ग की अधिकतर शिक्षित महिलाओं द्वारा दिया जाता हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- *अग्रवाल सरला बंसल डॉ. अविनाश, शिशु स्वास्थ्य, श्याम प्रकाशन, जयपुर 2008*
- *कपिल एच के, अनुसंधान विधियां, एच पी भार्गव बुक हाउस, आगरा 2012*
- *एस विवेक अधिश, शिशु एवं बच्चों की आहार पूर्ति परामर्श, बी पी 33 पीतमपुरा हाउस, मेरठ 2005*
- *सक्सेना मनीषा, झाबुआ जिले की आदिवासी महिलाओं में शिशु की पोषण संबंधी आदतें, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर 1999*
- *माँ का दूध शिशु का प्रथम टीकाकरण, हिन्दी मासिक पत्रिका इन्दौर 2011*
- *विश्व स्तनपान सप्ताह 1 से 7 अगस्त महिला एवं बाल विकास विभाग, धार, म प्र 2003*
- *Web Sites*
- *breast feeding promotion network of india (BPNI)*
- *shanti ghos breast feeling talk*
- *unicef repart for breast feeding*
- *www. linkages project org.*
- *birth inifiation of breast feeding and the first seven days after birth.*
- *www. researchlink.com*